

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये किङ्किङ्काकाण्डे

॥ चतुःषष्टितमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ चतुःषष्टितमः सर्गः ॥

समुद्रस्य रिशालतामालोक्य रिषीदतो रानरान् सान्द्रुयिंरासदस्य  
तान् प्रति पृथक् पृथक् समुद्रलङ्घनशक्तिरिषयकः प्रश्नः

आख्याता गृध्रराजेन समुत्प्लुत्य प्लरसमाः।  
सङ्गताः प्रीतिसंयुक्ता रिनेदुः सिंहरिक्रमाः ॥ 4.64.1 ॥

सम्पातेरचनं श्रुत्वा हरयो रारणक्षयम्।  
हृष्टाः सागरमाजगुः सीतादर्शनकाङ्क्षिणः ॥ 4.64.2 ॥

अभिगम्य तु तं देशं ददृशुर्भीमरिक्रमाः।  
कृत्स्नं लोकस्य महतः प्रतिविश्वमरस्थितम् ॥ 4.64.3 ॥

दक्षिणस्य समुद्रस्य समासाद्योत्तरां दिशम्।  
सन्निवेशं ततश्चक्रुर्हरिरीरा महाबलाः ॥ 4.64.4 ॥

प्रसुप्तमिर चान्यत्र क्रीडन्तमिर चान्यतः।  
क्वचिं परतमात्रैश्च जलराशिभिरारूतम् ॥ 4.64.5 ॥

सङ्कुलं दानरेन्द्रश्च पातालतलरासिभिः।  
रोमहर्षकरं दृष्ट्वा रिषेदुः कपिकुञ्जराः ॥ 4.64.6 ॥

आकाशमिर दुष्पारं सागरं प्रेक्ष्य रानराः।  
रिषेदुः सहिताः सर्वे कथं कार्यमिति ब्रुवन् ॥ 4.64.7 ॥

রিষণাং রাহিনীং দৃষ্টরা সাগরস্য নিরীক্ষণাৎ।  
আশ্রাসযামাস হরীন্ ভযার্তান্ হরিসত্তমঃ ॥ 4.64.8 ॥

ন রিষাদে মনঃ কার্যং রিষাদো দোষরত্তরঃ।  
রিষাদো হন্তি পুরুষং বালং ক্রুদ্ধ ইরোরগঃ ॥ 4.64.9 ॥

যো রিষাদং প্রসহতে রিক্রমে সমুপস্থিতে।  
তেজসা তস্য হীনস্য পুরুষার্থো ন সিদ্ধ্যতি ॥ 4.64.10 ॥

তস্যাং রাত্র্যাং র্যতীতায়ামঙ্গদো রানরৈঃ সহ।  
হরিবৃদ্ধৈঃ সমাগম্য পুনর্মন্ত্রমমন্ত্রযৎ ॥ 4.64.11 ॥

সা রানরাণাং ধ্বজিনী পরিরার্যঙ্গদং বভৌ।  
রাসরং পরিরার্যের মরুতাং রাহিনী স্থিতা ॥ 4.64.12 ॥

কোহন্যস্তাং রানরীং সেনাং শক্তঃ স্তম্ভযিতুং ভরেৎ।  
অন্যত্র রালিতনযাদন্যত্র চ হনুমতঃ ॥ 4.64.13 ॥

ততস্তান্ হরিবৃদ্ধাংশ্চ তচ্চ সৈন্যমরিন্দমঃ।  
অনুমান্যাঙ্গদঃ শ্রীমান্ রাক্যমর্থরদব্ররীৎ ॥ 4.64.14 ॥

ক ইদানীং মহাতেজা লঙ্ঘযিষ্যতি সাগরম্।  
কঃ করিষ্যতি সুগ্রীরং সত্যসন্ধমরিংদমম্ ॥ 4.64.15 ॥

কো রীরো যোজনশতং লঙ্ঘযেত প্লরঙ্গমঃ।  
ইমাংশ্চ যুথপান্ সর্ৱান্ মোচযেৎ কো মহাভযাৎ ॥ 4.64.16 ॥

কস্য প্রসাদাদ্ দারাংশ্চ পুত্রাংশ্চৈৱ গৃহাণি চ।  
ইতো নিবৃত্তাঃ পশ্যেম সিদ্ধার্থাঃ সুখিনো রযম্ ॥ 4.64.17 ॥

কস্য প্রসাদাদ্ রামং চ লক্ষ্মণং চ মহাবলম্।  
অভিগচ্ছেম সংহৃষ্টাঃ সুগ্রীরং চ রনৌকসম্ ॥ 4.64.18 ॥

যদি কশ্চিৎ সমর্থো রঃ সাগরপ্লবনে হরিঃ।  
স দদাৎরিহ নঃ শীঘ্রং পুণ্যামভযদক্ষিণাম্ ॥ 4.64.19 ॥

অঙ্গদস্য রচঃ ঞ্ফৎরা ন কশ্চিৎ কিঞ্চিদব্রবীৎ।  
স্তিমিতেরাভরৎ সর্বা সা তত্র হরিরাহিনী ॥ 4.64.20 ॥

পুনরেরাঙ্গদঃ প্রাহ তান্ হরীন্ হরিসত্তমঃ।  
সর্বে বলরতাং শ্রেষ্ঠা ভরন্তো দৃঢ়রিক্রমাঃ।  
র্যপদেশকুলে জাতাঃ পূজিতাশ্চাপ্যভীক্ষশঃ ॥ 4.64.21 ॥

নহি রো গমনে সঙ্গঃ কদাচিৎ কস্যচিদ্ ভরেৎ।  
ব্রুধ্বং যস্য যা শক্তিঃ প্লবনে প্লবগর্ষভাঃ ॥ 4.64.22 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে বাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে  
কিঙ্কিকাকাণ্ডে চতুঃষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥